उ0प्र0 शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज।

पाठ्यक्रम

प्रवक्ता (PGT) – समाजशास्त्र
(विषय कोड–16)

समाज शास्त्र का अर्थ; समाजशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास, अध्ययन क्षेत्र एवं विषयवस्तु, महत्व, समाज शास्त्र का अन्य समाज विज्ञानों के साथ सम्बन्ध।

पाश्चात्य समाजशास्त्रीय विचारक– आगस्त काम्ट, हरर्बट स्पेन्सर, कार्ल मार्क्स, इमाइल दुर्खीम एवं मैक्स वेबर।

भारतीय समाजशास्त्रीय विचारक– जी0एस0 घुरिये, राधाकमल मुकर्जी, ए0आर0 देसाई, एस0सी0 दूबे।

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त– प्रकार्यवाद, संघर्ष का सिद्धान्त, सामाजिक विनिमय का सिद्धान्त, प्रतीकात्मक अन्तः क्रियावाद, प्रघटनाशास्त्र।

प्रमुख सामाजिक संस्थाएं– परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म।

सामाजिक प्रक्रियाएं– सहयोगात्मक–सहयोग, व्यवस्थापन, सात्मीकरण। असहयोगात्मक–प्रतियोगिता, संघर्ष

प्राथमिक अवधारणाएं– समाज, सामाजिक समूह, समिति, संस्था, समुदाय, सामाजिक स्तरीकरण।

भौगोलिक पर्यावरण एवं मानव समाज, संस्कृति एवं व्यक्तित्व, समाजीकरण, सामजिक नियंत्रण, सामाजिक परिवर्तन।

हिन्दू समाजिक संगठन– वर्णाश्रम, धर्म, पुरुषार्थ, संस्कार, कर्म का सिद्धान्त, हिन्दू विवाह एवं संयुक्त परिवार।

मुस्लिम विवाह एवं परिवार।

जाति व्यवस्था, जाति एवं वर्ग, ग्रामीण शक्ति संरचना एवं उभरता नेतृत्व।

ग्रामीण परिवर्तन एवं विकास– सामुदायिक विकास कार्यक्रम, भूमि एवं कृषि सुधार, हरित क्रान्ति, समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, पंचायती राज।

भारतीय समाज में परिवर्तन– पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण, सार्वभौमीकरण एवं स्थानीयकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, धर्मनिरपेक्षीकरण, वैश्वीकरण।

सामाजिक विघटन की अवधारणा, वैयक्तिक विघटन, पारिवारिक विघटन, सांस्कृतिक विघटन, अपराध, बाल अपराध, श्वेतवसन अपराध।

सामाजिक समस्याएं– बेकारी, निर्धनता, मद्यपान एवं मादक द्रव्यव्यसन, भिक्षावृत्ति, जनसंख्या की समस्या, लैंगिक असमानता, अनुसूचित जाति, जन जाति एवं अन्य पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित समस्याएं, भारतीय स्त्रियां एवं उनमे सम्बन्धित समस्याएं'